International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

हिन्दी काव्य में राष्टीयता की भावना

डॉ मंजु तँवर
एसोसिऐट प्रोफेसर, सत्यवति कॉलेज
अशोक विहार,
नई दिल्ली

हमारे प्राचीन आचार्यों ने भाव विवेचन के अर्न्गत 'राष्टीयता' जैसे किसी भाव का उल्लेख नहीं किया गया है, किन्तु विगत इतिहास इस बात का साक्षी है कि राष्टीयता की एक प्रबल भाव है। इसकी प्रद्वलता तो इसी से सिद्व है कि कई बार राष्टीयता की प्रेरणा के सम्मुख अन्य स्थायी भाव – वात्सल्य, रति, शोक आदि फीके पड़ गये हैं। स्वतन्त्र्य आन्दोलन में भाग लेने वाले व्यक्तियों का अपने सम्पत्य एवं पारिवारिक जीवन को ठुकराकर राष्टीयता की आग में कूद पड़ना, यही सिद्व करता है कि राष्टीयता का भाव कभी कभी अन्यय सभी प्रमुख भावों से उपर उठ जाने की भी क्षमता रखता है।

अतः यह प्रष्न उठना स्वाभावित है कि इतने प्रबल भाव का उल्लेख प्राचीन आचार्यों ने क्यों नहीं किया ? इसका मुख्य कारण यह हो सकता है कि आचार्यों ने स्थायी भाव के अर्न्गत चिरन्तन भावनाओं का ही उल्लेख किया है जिनका मानव हृदयों की मूल प्रवृत्तियों से गहरा संबंध है। राष्टीयता एक सार्वलौकिक और सर्वकालिक भाव नहीं है। इसकी समग्र उत्तेजनापूर्ण अभिव्यक्ति कुछ विषिष्ट परिस्थितियों में ही हुआ करती है। अतः इसका उल्लेख न होना स्वाभाविक ही है।

अब अगला प्रष्न यह उठता है कि शास्त्रीय दृष्टि से राष्टीयता को किस रस के अन्तर्गत स्थान दिया जाए ? राष्टीयता का अर्थ देष प्रेम किया जाता है, अतः कित्रित विज्ञान इसे 'रति भाव' से संबंधित मानते हैं। अपने देष की दुर्दषा को देखकर राष्टीयता का स्राव होता है। अतः इसे करूण से संबंधित भी कहा जा सकता है। देष प्रेम के लिये संघर्ष और युद्व भी किया जाता है। अतः इसे वीर रस में भी स्थान दिया जा सकता है। देष के सुधार के लिये क्रांति का इन्कलाब जिन्दाबाद का आह्वान भी कया जाता है। अतः इसे रोड रस से संबंधित भ माना जा सकता है। देष प्रेम से अभभूत व्यक्ति अपने दो पर अत्याचार करने वाले विदेषियों को घ्रुणा की दृष्टि से देखता है। अतः इसे वीभत्स रस में भी स्थान दिया जा सकता है। इसके अतिरिक्त अपने देष पर भारी विपत्ति की आषंका के आधार पर इसे भ्यानक रस के संबंधित भी बताया जास कता है। इस प्रकार

लगभग सभी रसों से इसका कुछ न कुछ संबंध है, जो इसकी व्यपकता को सूचित करता है, परन्तु यह हमारी मूल समस्या का समाधान नहीं है।

हमारे विचार से राष्टीयता का मूल भाव ात्मगौरव देष की रक्षा के लिए उत्साह है। अतः से वीर रस के अन्तर्गत स्थान मिलना चाहिये।
हिन्दी काव्य में राष्टीयता के मुख्यतः दो रूप मिलते हैं – एक मुस्लिम साम्राज्य के विरूद्व और दूसरा अंग्रेजी साम्राज्य के विरूद्व हिन्दी साहत्य में आदिकाल ें वीर रस से संबंधित काव्यों में मुख्य रूप से दलपति विजय कृत खुमान रासो, जमनिक कृत परमाल रासो, शारंगधर कृत हम्मीर रासो, विजयपाल रासो, वीसलेख रासो आदि प्रमुख हैं। इस काल की अध्धिकांष रचनायें अर्ध प्रमाणिक है। अतः अधिकांष विद्वान इनकी कवि भाषा व घटना संबंधी एतिहासिक त्रृटियों के कारण इन्हें मान्यता प्रदान नहीं करते। तथापि चन्द वरदासी कृत्य 'पृथ्वीराज रासो' अर्द्व प्रमाणिक होने पर भी और सटीक वर्णनों के कारण उल्लेखनीय है । इस काव्य में विभिन्न युगों का आयोजन व्यक्तिगत द्वेष के आधार पर होता है। अतः इसमें राष्टीयता का विकास नहीं मिलता। हॉ, जातीय गौरव अवष्य मिलता है –:

ईत पृथिराज नरचंद, उतहि परिहार प्रबल रण।
दुवनि हृथ्थ असि कठि्ठ करन कलपन्त समय जन।
दुवनि अंग सनाह, दुवनि नख चखन उघोइ।
दुवनि इष्ट आरंभ हनि दुव हत्य दुधार।

मध्यकाल में राजस्थान के अनेक डिंगल कवियों ने जातीय गौरव से अनुप्रमाणित मुक्तक छन्दों की रचना की है। इनके मुख्य नायक महाराणा प्रताप रहे हैं। महाराणा प्रताप के अदम्य उत्साह के यषोषान में इन कवियिों की वाणी मुक्त कंठ से उद्घोषित हुई है। श्री पृथ्वीराज राठौर ने अपने दोहों में अभारतीय सत्ता के प्रतीक अकबर की निन्द और प्रताप के गुणों की प्रषंसा की है।

जासो हाट बाट रेहसी जग, अकबर ठग जासा एक।
हे राख्यो खत्री ध्रम राणै, सारा ले बरती संसार।।
पृथ्वीराज राठौर की ही भांति कवि दुरसानी ने भी महाराणा प्रताप की प्रषंसा में अनेकों मार्किक दोहों की रचना की है। महाराणा प्रताप के अनन्तर हिन्दू राष्टीयता के संरक्षक छत्रपति षिवाजी व महाराजा छत्रसाल रहे। इन दोनों वीरो ंको आलम्बन बनाकर महाकवि भूषण ने काव्यय रचना की है। उन्होने –

ऐस फैल गैल बैल खलक में खैल–मैल
ग्जन की ठैल–पैल, पारावार ज्यों हलत हैं।
के साथ ही यहां तक कह दिया है :–
साजि चतुरंग वीर रंग में तुरंग चढ़ि।
सरजा षिवाजी नग जीतन चलत है।

भले ही आज के कीटालोचक इन यषोगानों को राष्टीयता से ओत प्रोत न मानें तथापि इनमें जातीय गौरव तो स्वीकार करना ही होगा, जो राष्टीयता का प्राण है।

इसके अतिरिक्त आधुनिक हिन्दी काव्य का तो विकास ही उस समय हुआ, जबकि समूचा राष्ट अंग्रेजी सत्ता की गुलामी से चीत्कार कर रहा था। अतः तत्कालीन काव्य में राष्टीय यंजना आवष्यक सी हो गई थी । इस युग के कवियों ने राष्टी की दुर्दष का चित्रण करके भारतीय जनता में क्रांति का मन्त्र फूंकना चाहा। भारतेन्दु हरिष्चन्द्र ने लिखा है –

सत्रु सत्रु लडवाइ दूरि रहिं लखिय बमासा
बल देख्यि त्राहि त्राहि मलि दीजै आसा ।

द्विवेदी युग के कवियों में मैथलीषरण गुप्त, माखन लाल चतुर्वेदी, सुभद्रा कुमारी चौहान, सोहन लाल द्विवेदी आदि प्रमुख हैं। गुप्त जी एक ओर समन्वयात्मक ढंग से कहते हैं :–

हम कौन थे? क्या हो गये ? और क्या होंगे अभी ?
आओ विचारें मिलकर आज समस्यायें सभी।
और दूसरी ओर अप्रत्यक्ष धुत्कार भी देते हैं :–

जो भरा नहीं भावों से बहती जिसमें रसधार नहीं
वह हृदय नही है पत्थर है, जिसमे स्वदेष का प्यार नहीं।
माखनलाल चतुर्वेदी 'जवानी' नामक कविता में लिखते हैं :–

द्वार बालों का खोल, चल भूडोल करदें
एक हिमगिरि, एक सिर का मोल कर दें
मसलक अपने इरादों सी उठाकर,
दो हथेली हैं कि पृथ्वी गोल कर दें।
इसके अतिरिक्त सुभद्रा कुमार चौहान की ये ओजपूर्ण पंक्त्यिां :–

बुन्देले हर बोलों के मुंह हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी।
आज बच्चे बच्चे की जबान पर है। वे बहिन के रूप में अपने भाईयों को चुनौती देती हुई कहती हैं :–
आते हो भाई! पुनः पूछती हूँ –
विषमता के बन्धन की है लाज तुमको ?
तो बन्दी बनो, देखो बंधन है कैसा।

चुनौती यह राखी की है आज तुमको।

इसके साथ ही सोहन लाल चतुर्वेदी ने पुष्प के माध्यम से आत्माभिव्यक्ति कितने सुंदर ढंग से की है :–
मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर तुम देना फेंक।
मातृभूमि पर शीष चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक।

रामनरेष त्रिपाठी तो मनुष्यता का विकास ही देष प्रेम की पुण्य भावना में मानते हुए कहते हैं :–

अमल असीम त्याग से विलसित।
आत्मा के विकास से जिसमें –
मनुष्यता होती है विकसित।

इसके अतिरिक्त आज के कवि ने ही राष्ट प्रेम हीन मनुष्य को पशु से भी निम्न कोटी का बताया है।
नहीं उठी जिसके मानस में देष प्रेम की प्रबल तरंग।
रंगा नहीं है जिसका तनम न मातृ भूमि के गौरव रंग।
जन्मभूमि की बलिवेदी पर जिसमें बलि की नहीं उमंग।
मंगल मनुज नहीं वह ष्षु से निम्न कोटि का कटि पतंग।

इस प्रकार हम देखते हैं कि हिन्दी के कवियों ने देष प्रेम की अभिव्यक्ति अनेकों कविताओं में की है। फिर भी यह आष्चर्य की बात है कि सन् 1920 से 1947 तक स्वान्त्र्य आंदोलन की पूरी झलक हिन्दी के किसी प्रबंध काव्य में बलिदान की तुलना में हमारे कवियों की रचनाएं हल्की ही पड़ती हैं। गुप्त, प्रसाद, पंत निराला जैसे कवियों ने

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

अनेकों वीरोकं को फांसी के तख्ते सपर ढूलते हुए भी उसे सपष्ट रूप से वर्णन नहीं किया। विषेषतः छायावादी कवि तो राष्टीय आंदोलन से प्रायः विमुख ही रहे।

अतः आज जबकि हमारा राष्ट स्वतंत्र है तो राष्टीयता का मंद पड़ जाना स्वाभाविक है। यह हमारे कवियों का कर्तव्य है जनमानस में राष्टीय भावना का स्फु रण करके उन्हें नव निर्माण की ओर अग्रसर करें।

संदर्भ ग्रंथ

हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास – हजारी प्रसाद द्विवेदी

संस्कृति और हजारी प्रसाद द्विवेदी – डॉ मंजु तंवर

साहित्य की सैद्वांतिकी – डॉ मंजु तंवर